रिकार्ड–जाग सजनियां जाग.....ओमशांति प्रातःक्लास 28.11.67

मीठे2 रुहानी बच्चों ने क्या सुना?वंडरफुल नई बातें सुनी। कितनी समझ की बात है। साजन एक को कहा जाता है। सजनियां तो सभी भक्तों को कहा जाता है। भगवान और भक्त। भक्त कहने से मेल फीमेल दोनों आ जाते हैं। सभी भक्तों अथवा सजानियों का एक ही है साजन। एक2 अक्षर का अर्थ समझना चाहिए। यहां पर तुमको बेसमझ से समझदार बनाना है। बेसमझ कहा ही जाता है तमोप्रधान पत्थरबुद्धि को। भगवान को कहते हैं ना कि इनको अच्छी बुद्धि दो। अभी तुमको कितनी अच्छी बुद्धि मिल रही है। इन ल.ना. की कितनी अच्छी बुद्धि थी। यह विश्व के मालिक थे। विश्व का मालिक बनने में जरूर उत्तम बुद्धि चाहिए ना। तुम जानते हो पहले हम ना रचता को ना रचना की आदि ,मध्य,अंत को जानते थे। तो बेसमझ कहेंगे ना। अभी तुमको कितनी लिफ्ट मिलती है। इनको रुहानी लिफ्ट कहा जाता है। रुहानी लिफ्ट का मैन भी अच्छा चाहिए ना। इस रुहानी लिफ्ट द्वारा तुम एकदम उपर निर्वाणधाम में चले जाते हो। बच्चों को यह सब बातें सुनाकर रोमांच खड़े हो जाने चाहिए। बाबा हम सबको उपर ले जाते हैं। यह वंडरफुल लिफ्ट है ना। कोई भी चीज देखने में नहीं आती है। आत्मा उड़ती है। बुद्धि जैसे कि लिफ्ट मिसल बन जाती है। उस बुद्धि के बल से एकदम उपर चढ़ जाते हैं। चढ़ना–उतरना सारा राज तुम्हारी बुद्धि में है। बाप आकर तुम आत्माओं को कितना रिफ्रेश करते हैं। रिफ्रेश भी होते हैं तो बच्चे मधुबन में आकर विश्राम भी पाते हैं। जब तुम नई2 बातें सुनते हो तो कितनी मीठी लगती है। रुहानी लिफ्ट मिलने से तुम एकदम स्वीटहोम में चले जाते हो। यह रुहानी लिफ्ट और कोई मनुष्य मात्र दे नहीं सकते हैं। बाप समझाते हैं मीठी2 आत्माएं तुम असल में तो शांतिधाम में थी। फिर सुखधाम में आई। अब तो दुःखधाम है। सेकेंड में सारा राज़ बुद्धि में आ जाता है। सुखधाम ,सत,त्रेता के समय तक चला ,सारा हिसाब अंगे अखरे बाप समझाते हैं। बाप एक होता है। बहुत बाप नहीं होते हैं। लौकिक सम्बंध में तो अनेक बच्चे और अनेक ही बाप होते हैं। यह तो रुहानी एक बाप के अनेक बच्चे हैं। उस एक बाप को भी भगवान ,प्रभु,ईश्वर कहा जाता है। बाप बच्चों को बैठ पढ़ाते हैं कि सिर्फ मामेकम् याद करो तो तुम प्योर बनकर उड़ जावेंगे। प्योर बने बिना तुम उड़ नहीं सकेंगे। है भी बहुत ही सहज बातें। बाप इस तन द्वारा बैठ समझाते हैं कि मैंने इस प्रकृति का आधार लिया है। इनके भी जन्म बताते हैं। तो इनके ही 84जन्म हैं। अब मैं और कोई के तन में आ ही कैसे सकता हूं? जो शुरू से लेकर चक्कर लगाते2 अंत में आये हैं उनके ही तन में मुझे आना होता है। फिर उनको ही पहले नम्बर में जाना है। यह ड्रामा को समझना है ना। लाखों वर्ष की तो बात हो ही नहीं सकती है। समझो कि कोई कहते भी हैं कि सतयुग को लाखों वर्ष हुए। तो भला अब कितना सम्वत कहेंगे?लाखों वर्ष की बात तो कोई को याद भी नहीं हो सकती है। इतना लम्बा सम्वत कहां से आवेगा?देखो विकर्म सम्वत भी तो दो हजार दो सौ दिखाते हैं। तो यह तो सहज बात है कि कल्प तो है ही 5000वर्ष का ;परंतु लाखों वर्ष कहकर कितना .....कर दिया है। बाप आकर कितना सहज समझाते हैं। यह बात तो सारी अखबारों में भी जावेगी कि कल्प 5हजार वर्ष का है। वो विद्वान ,पंडित लोग तो लाखों वर्षों का कह देते हैं। कहते हैं कि कलियुग तो अजुन शुरू हुआ है। रेगड़ी पहल रहा है। तो घोर अंधेरे में सभी हैं ना। आग सामने खड़ी है। कहते भी हैं ना कि भंभोर को आग लगी थी। बाप समझाते हैं कि रावणराज्य कोई सिर्फ भारत में ही थोड़े ही है। यह सारी दुनियां में रावण का ही राज्य है। सारी दुनियां लंका है। शास्त्रों में तो क्या2 बातें लिख दी हैं। तुमसे वो लोग पूछते हैं कि क्या तुम लोग शास्त्रों को नहीं मानते हो?कहो अरे वाह! तुमको पता ही नहीं कि हमने द्वापर से लेकर गीता पढ़ी है। सबसे जास्ती तो भक्ति हमी ने की है। 2500वर्ष हमने गीता पढ़ी है ;परंतु अभी हमको ज्ञान और भक्ति का पता पड़ा है। अभी बाप ने ज्ञान दिया है तो सदगति हो गई तो फिर हम भक्ति

कैसे करेंगे?भक्ति से तो दुर्गति हुई ना। यह सभी प्वाइंट्स हैं समझाने लिए। ऐसे भी नहीं कि सिर्फ समझाने से ही काम हो जाता है। पहले तो योग चाहिए। योग में रहकर तुम मुरली चलावेंगे तो फिर तुम्हारी उस ज्ञान तलवार में जौहर भरेगा। बाप सर्वशक्तिवान है तो उनसे ताकत मिलती है ना। बैरिस्टरी पढ़ाने वाले को सर्वशक्तिवान कहा जाता है क्या?सर्व माना ही कि सारी दुनियां में से शक्तिवान। इसमें तो पहलवानी की तो बात ही नहीं है। शक्ति किसको कहा जाता है यह भी भारतवासी जानते थोड़े ही हैं। तुमको सब अनुभव है। जानते हो कि सर्वशक्तिवान शिवबाबा है। माया भी कम नहीं है वो भी सर्वशक्तिवान है। तुम बच्चों की बुद्धि में बेहद का ड्रामा का सारा ज्ञान है। झाड़ कितना बड़ा होता है। उसके पत्ते कोई गिनती कर सकेंगे क्या?बाप कहते हैं कि इन सभी बातों में जाने से क्या फायदा?मूल बात है पतित से पावन होने की। बाप को कहते भी हैं कि बाबा आकर हमको पतित से पावन बनाओ। बाप ने समझाया है कि तुम सभी विषियस थे। यह (ल.ना.) वाइसलेस हैं ना। यह भी कोई मनुष्य मात्र समझते थोड़े ही हैं। इसलिए ही बाप के वाक्य हैं कि यह सभी जंगली जनावर आसुरी सम्प्रदाय हिरण्याकश्यप आदि हैं। सतयुग में तो यह आसुरी सम्प्रदाय वाले नाम होते ही नहीं हैं। कृष्ण के लिए दिखलाते हैं कि स्वदर्शनचक्र से सभी को मारा। कहीं पर फिर दिखाते हैं कि गइयां चराते थे। कहीं पर फिर कहते हैं कि गाली खाते थे। तो यह सभी बातें समझानी पड़ें कि कृष्ण ने गालियां क्या खाईं। कहते हैं कि चौथ का चंद्रमा देखा, ...को भगवाया। यही है सब दण्डकथायें। भक्तिमार्ग में यह सब सुनते2 नीचे ही उतरते आये हैं। सतोप्रधान से सतो,रजो,तमो तो बनना ही है। इस समय सभी हैं तमोप्रधान। जड़जड़ीभूत अवस्था को पाये हुए। इस समय के तो छोटे2 बच्चों की भी जड़जड़ीभूत अवस्था है। वानप्रस्थी है ;क्योंकि खलास तो सभी को होना ही है ना। कितना बड़ा झाड़ है। सारा ही तमोप्रधान है। इन बातों को तो कोई समझते नहीं हैं। बाप कितना समझाते हैं कि हे बच्चों जब तुम्हारी आत्मा सतोप्रधान थी तो तुम डीटी डायनैस्टी में थे। अब तमोप्रधान बनने से तुम डबल डायनैस्टी में हो। समझते हो ना इस समय के मनुष्य मात्र सभी तुच्छबुद्धि नर्कवासी हैं। अगर कहते हैं कलियुग की आयु अजन 40हजार वर्ष है तो इससे और ही गंदा नर्क बनेगा। सुना है ना कृष्ण को काली दह में सर्प ने डसा। कृष्ण डांस करता था। बाबा ने बताया ना कि यह गांव का छाड़ा(छोड़ा) था काली दह में डांस करता था। काली दह में एक/दो को डसते रहते हैं। उनको कहा ही जाता है रौरव नर्क ;परंतु यह मनुष्यों को मालूम तब पड़े जब स्वर्ग का सामाचार भी सुने। लाखों वर्ष कह देने से किसको भी खयाल में कुछ भी नहीं आता। अभी तुम पुरुषार्थ कर रहे हो मनुष्य से देवता बनने का। यह हार और जीत का खेल भारत पर ही बना हुआ है। माया से हारे हार है.....माया धन को नहीं कहा जाता। माया तो तुम्हारा बड़ा भारी दुश्मन है। जिनके पास धन है तो वह डांस करते रहते हैं। कृष्ण सबसे साहुकार था ना। बाप देखो कैसे बैठ समझाते हैं। इनके पास तो बहुत पैसे हैं। यह राज–भाग कैसे इसने पाया ,यह भी तुम समझते हो। तुम ही खुद बनते हो। मनुष्य से देवता बनते हो ना। बाप है ही बेहद का मालिक ,तो उनको वातावरण भी ऐसा होगा ना। यह जैसे एक कहानी बैठ बताते हैं। लाखों वर्ष की कहानी तो किसको याद हो कैसे सकती है?क्रिश्चियन लोग पुरानी चीजों की बहुत वैल्यु रखते हैं। अब विचार करो तो पुरानी ते पुरानी क्या चीज होगी। कृष्ण का चित्र ही सबसे पुराना होगा। अमेरिकन लोग को कोई पुरानी मूर्ति कृष्ण की मिलती है तो उनका लाख डेढ़ भी दे देते हैं। बहुत दाम दे देते हैं। बहुत पैसा कमाते हैं। कोई से पूछो कितने वर्ष की पुरानी है तो 5000वर्ष, लाख दो लाख की पुरानी कह देते हैं ;परंतु अब बुद्धि कहती है पुरानी ते पुरानी है ही यह कृष्ण। इनकी मूर्ति बहुत दिल से लेते हैं। श्री नारायण के क्यों नहीं लेते हैं? कहते हैं हमको तो लॉर्ड कृष्ण का चाहिए। क्योंकि वह फिर

(मुरली अधूरी है)